हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 9 | अंक 22 | जनवरी 2017 | संपादक / टंकन / सज्जा : यंतुदेव बुधु | भाषा गई तो संस्कृति गई

सम्पादकीय

बैठकाओं का पंजीकरण !

जीवन में सब कुछ परिवर्तनशील है । बदलाव भी विकास की एक प्रक्रिया होती है । जब शिक्षा व शिक्षण-प्रक्रिया में परिवर्तन आता है तो यह स्वाभाविक है कि प्रशासन-व्यवस्था में भी परिवर्तन हो ।

इस वर्ष से "हिंदी प्रचारिणी सभा" से पंजीकृत बैठकाओं का पंजीकरण नए तरीके से किया जा रहा है । यह प्रक्रिया इसलिए लागू की जा रही है ताकि (प्राथमिक)पहली से छठी कक्षा तक की परीक्षाएँ अनुशासित ढंग से सम्पन्न हो ।

इस नई प्रक्रिया से परिचित कराने के लिए सभा बैठका-संचालकों के लिए तारीख 4 फरवरी को एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन कर रही है । कार्यशाला के दौरान विचारों का आदान-प्रदान होगा । हम सभी स्कूल-संचालकों से निवेदन करते हैं कि अपनी उपस्थिति देकर हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सभा को सहयोग दें ।

हमारे देश में कई ऐसे सायंकालीन व सप्ताहांत हिंदी-स्कूल हैं जिनमें नाम-मात्र के लिए शिक्षण कार्य होता है । गत वर्ष सभा की ओर से बैठकाओं के दौरे के दौरान यह देखा गया कि कुछ स्कूलों में बच्चों के पास न तो पुस्तकें हैं और न ही उनकी कापियाँ संशोधित हैं । दो-तीन शिक्षक एक ही कमरे में अनेक स्तरों के बच्चों के साथ पढ़ाते देखे गए। कारण यह बताया गया कि बच्चे कम हैं ! यह दुख की बात है कि स्थिति ऐसी होती जा रही है । शिक्षक भी बच्चों से क्रिओली में बातचीत करते हैं ! ऐसी अवस्था में बच्चे कैसे हिंदी सीख पाएँगे ?

कहीं-कहीं पर सरकारी स्कूल की पुस्तकों में ही बैठकाओं में पढ़ाई होती है जिससे बच्चे बोर तो होते ही हैं साथ में कुछ भी नयापन न होने के कारण बैठका आना छोड़ देते हैं । यह बात अभिवकों को भली-भाँति पता है । बच्चों का सही मार्ग-दर्शन नहीं हो पा रहा है ।

इसी बात को लेकर सभा ने "सुगम हिंदी" पुस्तक कड़ी कक्षा I-VI तक का निर्माण कर बच्चों के सामने एक नई सामग्री प्रस्तुत की जिससे बच्चों की रुचि बढ़े तथा उनको लाभ हो । हम आग्रह करते हैं कि बच्चे इन पुस्तकों का उपयोग करें और इनसे लाभान्वित हों । ♦

यंतुदेव बुधु
प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

समावर्तन समारोह 2016

छात्रा को पुरस्कृत कर रही डॉ. श्रीमती विदोत्मा कुंजल

ता. 10 दिसम्बर 2016 को हिंदी प्रचारिणी सभा के एस. एम. भगत सभागार में बड़े उत्साह के साथ समावर्तन समारोह मनाया गया । उत्सव की मुख्य अतिथि महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका डॉ. श्रीमती विदोत्मा कुंजल रही तथा अध्यक्ष पद पर श्री राजप्रकाश रामदोस जी शोभायमान थे । साथ में भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव डॉ. श्रीमती नूतन पांडे, विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. विनोद कुमार मिश्र, इलाके के सांसद माननीय श्री विकास ओरी उत्सव की शोभा बढ़ा रहे थे । खुशी की बात है कि सभा के मान्य प्रधान श्री बृजलाल धनपत जो कि 104 वर्ष के हैं, वे भी मंच पर विराजमान थे और समारोह का भरपूर आनन्द ले रहे थे । सभा के प्रधान ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए सभा द्वारा किए जा रहे कार्यों का ज़िक्र किया तथा सभा द्वारा उत्तमा साहित्य रत्न के प्रथम विजेता को दी जानेवाली छात्रवृत्ति की घोषणा की । उन्होंने पुरस्कृत होनेवाले छात्रों तथा सम्मानित होने वाले महानुभावों को भी बधाई दी ।

सभागार में उपस्थित लोगों ने बारी-बारी से कई महानुभावों के भाषण सुने । मुख्य अतिथि महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका डॉ. श्रीमती विदोत्मा कुंजल ने अपने भाषण में हिंदी भाषा में उच्च शिक्षा प्राप्त की बात कही । उन्होंने संस्कृत भाषा की महत्ता पर भी ज़ोर दिया ।

अन्त में मौके के अध्यक्ष महोदय श्री राजप्रकाश रामदोस जी के मुखारविन्द से मधुर वचन सुनकर लोग प्रभावित हुए । उन्होंने हिंदी भाषा को वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रचार की बात की । उन्होंने अपने भाषण से छात्रों को हिंदी पढ़ने तथा पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया । आधुनिक युग के दौर में कम्प्यूटर के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार पर भी बात की । उन्होंने सम्प्रेषण-कौशल पर ज़ोर देते हुए कहा कि इसके लागू होने से छात्रों को बहुत लाभ होगा । रामदोस जी ने अपने मधुर वचन से हिंदी प्रेमियों का दिल जीत लिया । उनके भाषण समाप्त होते ही सभागार तालियों से गूँज उठा ।

श्री राजप्रकाश रामदोस

प्रति वर्ष सभा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिए दो महानुभावों को सम्मानित करती है । वर्ष 2016 में डॉ. श्रीमती सरिता बुधु तथा प्रो. हेमराज सुन्दर जी को "हिंदी प्रचारिणी सभा सम्मान" से विभूषित किया गया । साथ में हिंदी भाषा के प्रचार में योगदान के लिए मॉरीशस के सात निजी कॉलेजों के मानेजरों को भी सम्मानित किया गया ।

अन्त में छठी तथा प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण किया गया । प्रथम दस में स्थान प्राप्त छात्रों को प्रोत्साहन हेतु साथ में नकद राशि भी प्रदान की गई । ♦

हिंदी की सम्भावनाएँ ।

" साभार – राष्ट्रभाषा सन्देश "

आज वैज्ञानिक विकास के कारण दुनिया सिमट गई है । किसी भी एक देश की घटना का प्रभाव दूसरे देश पर पड़े बिना नहीं रह सकता । अन्तरराष्ट्रीय सम्पर्क के कारण विदेशी साहित्य का प्रभाव हमारे साहित्य पर आया है । साहित्य में अन्तरराष्ट्रीय रुचि का विकास भूमंडलीकरण का परिणाम है । औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, कृषि–संस्कृति का विघटन,नारी–जागरण,स्थानान्तरण आदि ऐसे सामाजिक पक्ष हैं, जिनका प्रभाव अन्तरराष्ट्रीय साहित्य पर पड़ा है । हिंदी भाषा व साहित्य की वैश्वीकरण–चेतना अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों, मुक्त व्यापार–व्यवस्था तथा भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया का ही सर्वाधिक योगदान है । इससे समूचे विश्व–साहित्य को एक नयी दृष्टि मिल रही है । स्थानान्तरण के कारण परिचय–क्षेत्र बढ़ा, जिसका प्रभाव आधुनिक साहित्य पर पड़ा । देशी–विदेशी विभिन्न काव्य–धाराओं के सम्पर्क में आने से साहित्यकारों ने अनेक स्वस्थ प्रवृत्तियों को आयात किया, जिसकी अभिव्यक्ति विश्व–साहित्य में हो रही है ।

विश्वस्तर पर बढ़ रहे आर्थिक,सामाजिक,सांस्कृतिक तथा राजनैतिक सम्बन्धों के कारण वैचारिक स्तर पर एक वैश्विक चेतना का प्रादुर्भाव हो रहा है, जिससे समूचे विश्व–साहित्य को एक नयी दृष्टि मिल रही है । हिंदी भी इस वैश्विक चेतना से पूरी तरह आन्दोलित है, जिससे अन्तरराष्ट्रीय विचारधाराओं का परिपेक्ष्य वर्तमान हिंदी–साहित्य में पूर्णतः परिलक्षित हो रहा है ।

भारतवर्ष अभी तक हिंदी को अपनी राष्ट्रभाषा नहीं बना पाया । छोटे–छोटे देश, जैसे – इज़राइल, चेकोस्लोवाकिया तथा बड़े–बड़े देश, जैसे –चीन, जापान, रूस, जर्मनी आदि में अपनी–अपनी राष्ट्रभाषा प्रचलित है । किन्तु, हम अभी तक हिंदी को प्रचलन में नहीं ला सके । क्या यह भारत के संविधान का अपमान नहीं है कि हम हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित नहीं कर पा रहे हैं । हिंदी भारतवर्ष की ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व की भाषा है । किसी भी देश में चले जाइए वहाँ जब दो भारतीय मिलते हैं, वे अपनी हिंदी भाषा में बातचीत करते हैं । दयानन्द सरस्वती, विनोबा भावे, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन आदि ने भी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने पर जोर दिया है । इन्दिरा गांधी जी सदैव हिंदी में भाषण दिया करती थीं । प्रशंसा की पात्रा हैं सोनिया गांधी, जो कम समय में हिंदी सीख गयीं ।

हिंदी भारतवर्ष की उन शहीदों की भाषा है, जो देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान हो गए । यह उन स्वतंत्रता–सेनानियों की भाषा है, जिन्होंने इन्कलाब ज़िन्दाबाद का नारा देश को दिया । यह उन बलिदानियों की भाषा है, जिन्होंने हिंदी को काले पानी के कैदखाने की दीवारों पर अपनी व्यथा लिखी । यह उस शहीद की भाषा है, जिसने खुलेआम कहा था– **"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है । देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए कातिल में है ।"**

बच्चा जब पैदा होता है, तो वह सबसे पहले ऊँ, आँ करता है, जो हिंदी के शब्द हैं । जानवर से लेकर इंसान तक सबसे पहला अक्षर जो बोलता है, वह माँ है । जो हिंदी का शब्द है ।आह, ओह आदि शब्द भी हिंदी के ही प्रचलित शब्द हैं । देखा जाए तो हिंदी अन्तरराष्ट्रीय भाषा है । आज का मनुष्य किसी भी भाषा का प्रयोग अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप कर रहा है । इस परिपेक्ष्य में भारत तथा विश्व–स्तर पर हिंदी की विशेषता तथा उसकी दशा और दिशा पर विचार करना आवश्यक है । दुनिया जैस–जैसे ग्लोबल होती जा रही है, वैसे–वैसे हिंदी की माँग बढ़ती जा रही है । विश्व के अनेक देशों में आज हिंदी बोली तथा पढ़ाई जाती है । इस तरह हिंदी विश्व को दूसरी सबसे बड़ी भाषा है । पहला स्थान चीनी का है, दूसरा स्थान हिंदी, तीसरा स्थान अंग्रेज़ी का है । भारत से बाहर करीब 170 विश्वविद्यालयों में हिंदी के अध्ययन और अध्यापन का कार्य अनेक वर्षों से चल रहा है । वैश्वीकरण के इस दौर में हिंदी का प्रचार–प्रसार तथा उसकी माँग दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है ।

अमेरिका, लण्डन, इंग्लेण्ड, ब्रिटेन, कैनाडा, नीदरलैण्ड, स्वीडन, जर्मन, नार्वे, थाईलेण्ड, आस्ट्रेलिया, इटली, रूस, चीन, युगोस्लाविया,मंगोलिया, रोमानिया, आस्ट्रिया, पोलैण्ड, संयुक्त राज्य अमरिका, फिजी, मॉरीशस, ग्याना, सूरीनाम, त्रिनिडाड, सिंगापुर, मेलिशया आदि देशों में हिंदी का अध्ययन और अध्यापन होने के साथ–साथ हिंदी में अनेक पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं तथा वहाँ के राष्ट्रीय चैनलों–रेडियो आदि पर हिंदी के कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं । हिंदी भाषा की इस लोकप्रियता को जानने के लिए यदि हम इसकी गहराई में जाएँ तो और भी अनेक बातें हमें देखने को मिलेंगी ।

थाईलैण्ड में हिंदी जाननेवालों की संख्या एक लाख से भी अधिक है । मॉरीशस में आज भी हज़ारों छात्र हिंदी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं । ओस्ट्रिया व फीजी नामक द्वीप में अनेक हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं । साथ ही वहाँ के बाज़ारों में नामफलक अंग्रेज़ी के साथ–साथ हिंदी में लिखे होते हैं । कई सड़कों के नाम भी हिंदी में ही लिखे गए हैं । हिंदी की पाठशाला यहाँ 1936 में खोली गई थी । जापान के विश्वविद्यालयों में तथा संस्थाओं में हिंदी पढ़ाई जाती है । बीस वर्षों से 'सर्वोदय' पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं । आज से करीब 60 वर्ष पूर्व यहाँ के भाषा–विद्वान प्रो. वायो दोई ने प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा एम. ए. तथा पी. एच. डी. प्राप्त की थी, साथ ही इन्होंने "गोदान" का अनुवाद जापानी भाषा में किया था ।

लंडन विश्वविद्यालय का स्कूल ऑफ ओरिएण्टल एण्ड ऑफ्रिकन स्टडीज, जो कि एक प्राचीन संस्था है, यहाँ पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुआ था । यहाँ भी हिंदी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है ।

डॉ. प्रदीपकुमार सिंह
अध्यक्ष – साठ्ये महाविद्यालय
मुम्बई – भारत

क्रमशः ..... अगले अंक में ।

इतिहास के पन्नों से .....

मान्य प्रधान श्री बृजलाल धनपत

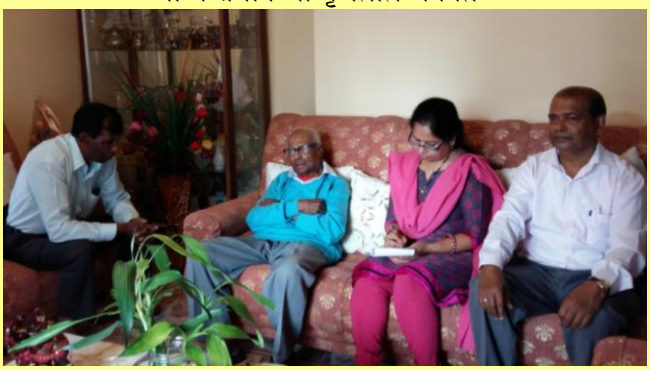

श्री बृजलाल धनपत जी के साथ बैठी भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव डॉ. श्रीमती नूतन पांडे, सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु तथा कोषाध्यक्ष श्री दहल रामदीन ।

हिंदी प्रचारिणी सभा के मान्य प्रधान श्री बृजलाल धनपत की उम्र आज एक सौ चार वर्ष है । वे हिंदी प्रचारिणी सभा के संस्थापकों में से हैं । यह बड़े गर्व की बात है कि धनपत जी आज हमारे साथ हैं । वे आज भी सभा के उत्सवों में अपने सुपुत्र के साथ उपस्थित रहते हैं ।

भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ.श्रीमती पांडे एक साक्षातकार के लिए उनके निवास स्थान पर ता. 29 नवम्बर 2016 को दस बजे सभा के प्रधान तथा कोषाध्यक्ष के साथ गई थीं । डॉ. श्रीमती पांडे को मान्य प्रधान जी से मिलने तथा उनके निवास स्थल पर एक साक्षात-कार की बड़ी इच्छा थी । जब हम वहाँ पहुँचे तो धनपत जी के सुपुत्र ने दरवाज़ा खोला और हमारा स्वागत किया । श्री धनपत जी बैठक में सोफ़े पर बैठे थे । हमें देखते ही वे हमारे स्वागत के लिए खड़े हो गए ।

हमें धनपत जी से मिलकर प्रसन्नता हुई ही पर श्रीमती पांडे जी की खुशी का ठिकाना न रहा । वे धनपत जी को देखकर मन ही मन मुस्कुरा रही थी और कागज़ कलम लेकर उनके साथ वार्तालाप के लिए तैयार हो गई । सबसे पहले श्री रामदीन जी ने धनपत जी से उनके कुशल-मंगल की जानकारी ली । फिर हमारे उनके यहाँ आने की वजह बतायी । धनपत जी ने बड़ी खुशी और उदारता के साथ डॉ. पांडे जी के प्रश्नों का उत्तर दिया । उनके बारे में ज्यादा जानकारी उनके सुपुत्र से मिली । उन्होंने बताया कि उनके पिताजी का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है और वे किसी भी बीमारी से ग्रस्त नहीं हैं ।

धनपत जी ने सबसे पहले अपने निजी जीवन, काम-काज, नौकरी, अपने परिवार के बारे में बताया । फिर हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना के उद्देश्यों तथा हिंदी शिक्षण के बारे में व हस्तलिखित 'पंकज' पत्रिका की जानकारी दी । उन्होंने हमें बताया कि मॉरीशस में विशेष रूप से हिंदी भाषा के प्रचार के लिए ही सभा की स्थापना हुई ।

मान्य प्रधान श्री बृजलाल धनपत जी से मिलकर हमें ऐसा लगा कि उनके समय के दृश्य हमारी आँखों के सामने दिख रहे हैं । धनपत जी से उस समय की काफ़ी जानकारी प्राप्त हुई । इस बात को लेकर डॉ. पांडे जी ने अपनी खुशी ज़ाहिर की तथा उस मुलाकात और समय के लिए श्री बृजलाल धनपत जी तथा उनके सुपुत्र को दिल की गहराई से आभार प्रकट किया । लगभग डेढ़ घंटे की यह बातचीत हमें हमेशा याद रहेगी ।

यंतुदेव बुधु
प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

चित्रावली – समावर्तन समारोह 2016

बैठकाओं में वार्षिकोत्सव

कात्रबोर्न के बृन्दाबन संस्था के छात्रों द्वारा एक नृत्य की प्रस्तुति ।

ता. 18 दिसंबर 2016 को कात्र बोर्न के बृन्दाबन सभा द्वारा संस्था की ग्यारहवीं वर्षगाँठ के दौरान आयोजित प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार वितरण समारोह बृन्दाबन मंदिर के सभागार में धूमधाम से मनाया गया । वहाँ की शिक्षण-संस्था के प्रधान श्री सुबारा जी तथा मंदिर के प्रधान श्री रामदूर जी के सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित हुआ था ।

उत्सव सुबह नौ बजे शुरू हुआ और लगभग साढ़े ग्यारह बजे समाप्त हुआ । कार्यक्रम का श्रीगणेश एक गणेश-वन्दना पर आधारित नृत्य से हुआ । छात्रों ने बारी-बारी से अपना-अपना प्रदर्शन दिखाया । किसी ने कविता सुनाई तो किसी ने गीत गाया । कुछ बच्चों ने फ़िल्मी गीत पर आधारित नृत्य पेश किया । बीच-बीच में महानुभावों के भाषण भी सुनने का मौका प्राप्त हुआ । साथ में पुरस्कार व प्रमाणपत्र भी वितरण होता गया ।

हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु तथा कोषाध्यक्ष श्री टहल रामदीन को भी इस समारोह में भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ । वहाँ का आयोजन बहुत ही बढ़िया रहा । अभिभावक अपने बच्चों के साथ सभागार में कार्यक्रम का आनन्द ले रहे थे । हिंदी भाषा के प्रति वहाँ के लोगों की दिल-चस्पी देखकर मनगदगद हो गया । उत्सव की समाप्ति पर सभी लोगों को सहभोज के लिएआमंत्रित किया गया । ♦

शिक्षित हिंदी पाठशाला (पेची पाके) का वार्षिकोत्सव ।

सभागार में बैठे माननीय सुमीलदत्त भोला (सहकारी मंत्री), सांसद माननीय धर्मेन्द्र सिसंकर तथा सभा के अन्य सदस्यगण । दूसरी पंक्ति में हिंदी प्रचारिणी सभा के श्री टहल रामदीन ।

ता. 18 दिसंबर को ही पेची पाके, मोंताई ब्लाँश में दिन के एक बजे शिक्षित हिंदी पाठशाला का वार्षिकोत्सव मनाया गया । इलाके के मंत्री तथा सांसद भी अपनी उपस्थिति से उत्सव की शोभा बढ़ा रहे थे । आमंत्रण पाकर हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान, मंत्री तथा कोषाध्यक्ष ने भी अपनी उपस्थिति दी । वहाँ भी कई लोगों के भाषण हुए तथा छात्रों ने अपना कार्यक्रम पेश किया । मंत्री जी ने हिंदी भाषा सीखने तथा सिखाने के आधुनिक तरीकों पर बात की । हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से सभा के प्रधान ने संस्था के संचालक को कुछ पुस्तकें प्रदान की । छात्रों के कार्यक्रम में - गीत, कविता, नृत्य, नाटक आदि शामिल था । कार्यक्रम लगभग चार बजे समाप्त हुआ । ♦

हिंदी प्रचारिणी सभा
सम्भावित गतिविधियाँ वर्ष - 2017

1. विद्यालय प्रवेश	---	शनिवार	7 जनवरी
2. ज़िलाध्यक्षों की बैठक	---	शनिवार	21 जनवरी
3. संचालकों की बैठक	---	शनिवार	4 फरवरी
4. बृहद अधिवेशन	---	शनिवार	25 मार्च
5. कविता वाचन प्रतियोगिता	---	प्रथम चरण	13 मई
		अंतिम चरण	10 जून
6. परीक्षाओं का आवेदन	---	क. प्रवेशिका	29 अप्रैल
		ख. सम्मेलन	3 जून
		(केवल हिंदी भवन में)	4 जून
		ग. अंतिम तिथि	29 जुलाई
7. स्थापना दिवस	---	शनिवार	10 जून
8. कार्यशाला (उत्तमा III)	---	शुक्रवार	4 अगस्त
9. श्रुतिलेख प्रतियोगिता	---	अगस्त (छुट्टी में)	
10.हिन्दी दिवस	---	शनिवार	12 अगस्त
11.निबन्ध प्रतियोगिता	---	अगस्त (छुट्टी में)	
12.परीक्षाएँ	---	क. छठी - शनिवार	16 सितम्बर
		ख. प्राथमिक -	15 अक्तूबर से
		ग. प्रवेशिका -	11 नवंबर
		घ. सम्मेलन	-18,19,20,21,22 दिसंबर
13.समावर्तन समारोह	---	9 दिसंबर	

उत्तमा (साहित्य रत्न) के प्रथम विजेता को - छात्रवृत्ति !

उत्तमा तृतीय खण्ड के छात्रों के लिए एक अच्छी खबर है । वर्ष 2017 उत्तमा (साहित्य रत्न)में प्रथम स्थान प्राप्त छात्र को हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से हिंदी में उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी । यह छात्रवृत्ति मॉरीशसीय नागरिक के लिए होगी और छात्रवृत्ति-विजेता को मॉरीशस के विश्वविद्यालय में ही अपनी पढ़ाई पूरी करनी होगी । सभा विजेता की पढ़ाई का पूरा खर्चा वहन करेगी । हम सभा की ओर से सभी छात्रों को शभकामनाएँ प्रकट करते हैं ।

- हिंदी भवन में उपलब्ध पुस्तकें -

- प्राथमिक - सुगम हिंदी I - VI तक
- प्रवेशिका - 1. हिंदी काव्य प्रवेश
  - 2. मॉरीशस की सुगम हिंदी कहानियाँ
  - 3. सुगम हिंदी व्याकरण
  - 4. सुगम हिंदी संस्कृत
- परिचय - मॉरीशस में खड़ी बोली हिंदी कि व्यवस्था और प्रसार
- मध्यमा - सुदामा चरित (उद्धृत कविताएँ)

- सूचना -

हिंदी भवन में हिंदी की कक्षाएँ ता. 7.1.17 से आरम्भ हो चुकी है ।
पढ़ाई का समय : शनिवार - सुबह नौ से एक बजे तक ।
प्राथमिक - पहली से छठी कक्षा तक
माध्यमिक - प्रवेशिका से उत्तमा तृतीय खण्ड तक
अतिरिक्त - कम्प्यूटर पर हिंदी में टंकन का प्रशिक्षण
उक्त पढ़ाई के लिए इच्छुक छात्र शनिवार को हिंदी भवन आकर व्यवस्थापक से संपर्क रख सकते हैं ।